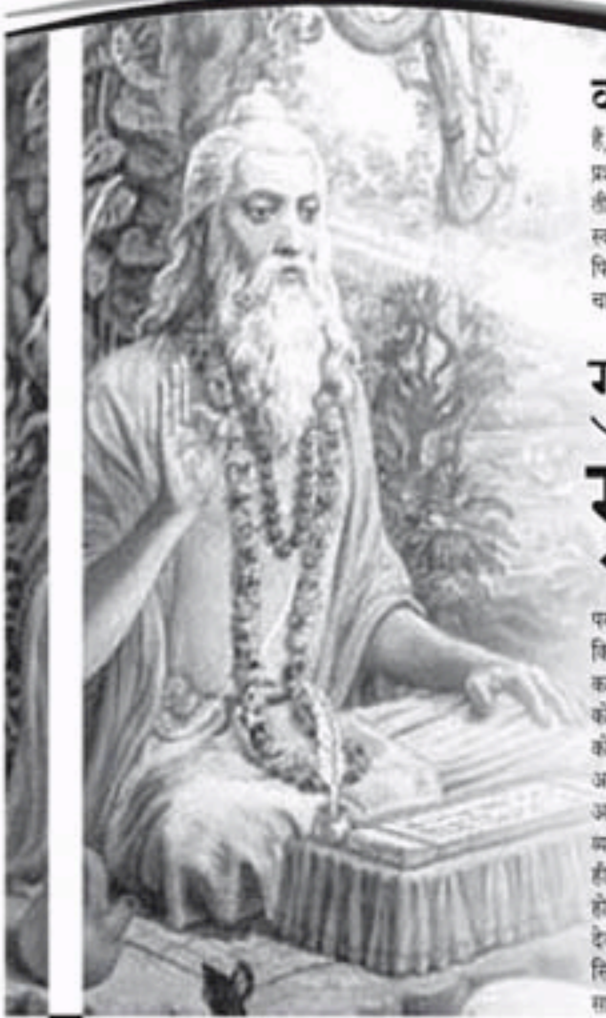

गुरुपूजन का पर्व गुरुपूर्णिमा

रस-चिंतन

आसाराम बापू

कोई आदरणीय होते हैं, कोई माननीय होते हैं, कोई वंदनीय होते हैं, कोई श्रद्धेय होते हैं, कोई प्रशंसनीय होते हैं किंतु सत्यस्वरूप में जगानेवाले, तीनों तापों से बचानेवाले साक्षात् परब्रह्म-परमात्म-स्वरूप तत्ववेत्ता भगवान व्यास तो पूजनीय हैं। फिर चाहे भगवान लीलाशाह के रूप में व्यास हों, चाहे मुनि शुकदेवजी के रूप में व्यास हों, चाहे परमहंस रामकृष्ण के रूप में व्यास हों... 'व्यास' किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। 'व्यास' उनको कहते हैं जो हमारे जीवन की बिखरी हुई धाराओं को सुव्यवस्थित करें, हमारे अंदर छुपे हुए खजाने को खोलने की कुंजी हमें बताएं। हमको उठाने की आध्यात्मिक व्यवस्था जो जानते हैं वे आध्यात्मिक अनुभव-संपन्न महापुरुष 'व्यास' हैं। ऐसे व्यासस्वरूप संतों के, सद्गुरुओं के पूजन का दिवस ही व्यासपूनम है, गुरुपूनम है। गुरु तीन प्रकार के होते हैं : (१) देवगुरु (२) सिद्धगुरु (३) मानवगुरु। देवगुरु जैसे देवर्षि नारद हैं और बृहस्पतिजी हैं...। सिद्धगुरु कभी-कभी किसी परम पवित्र, परम सात्त्विक व्यक्ति को मार्गदर्शन देते हैं। जैसे, गुरु दत्तात्रेय... परंतु मानवगुरु तो हमारे बीच रहते हुए, हमारे जैसे लिखते-पढ़ते, खाते-पीते, लेते-देते, हँसते-रोते यात्रा करते हैं। पग-पग पर विघ्न-बाधाओं को सहते हुए और उनका निराकरण करते हुए यात्रा करते हैं। परम तत्व को पाए हुए वे मानवगुरु हमारे मन की सारी समस्याओं तथा हमारी बुद्धि की उलझनों को जानते हैं और उनके निराकरण की व्यवस्था को भी जानते हैं। यहां तक कि हम भी अपने मन को उतना नहीं जानते जितना मानवगुरु जानते हैं। देवगुरु को प्रणाम है, सिद्धगुरु को भी प्रणाम है लेकिन मानवगुरु तो मानवजाति के परम हितैषी सिद्ध हुए हैं। उनको तो हम बार-बार प्रणाम करते हैं, उनका तो हम पूजन करते हैं। ऐसे सद्गुरु के प्रति श्रद्धा होना मानव-जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। जिसके जीवन में सद्गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं है वह तो कंगाल है। चाहे उसके पास लाखों, करोड़ों, अरबों रुपए हों फिर भी वह कंगाल है। रावण के पास सोने की लंका थी, हिरण्यकशिपु का स्वर्ण का हिरण्यपुर था फिर भी हम उसे धनवान नहीं कहेंगे, कंगाल कहेंगे। जबकि श्रीरामजी परम धनवान थे, क्योंकि त्रिभुवनपति होते हुए भी वे विश्वामित्रजी की पैरचंपी करते थे, गुरुवर वशिष्ठजी के आश्रम में सेवा करते थे। धन्य थी श्रीरामजी की गुरुभक्ति! उनको मेरा बार-बार प्रणाम...। गुरु के पूजन का दिन है गुरुपूनम परंतु गुरुपूजा क्या है? गुरु बनने से पहले गुरु के जीवन में भी कई उतार-चढ़ाव आए होंगे, अनेक अनुकूलताएं-प्रतिकूलताएं आई होंगी, उनको सहते हुए भी वे साधना में रत रहे, स्व में स्थित रहे, समता में स्थित रहे। वैसे ही हम भी उनके संकेतों को पाकर उनके आदर्शों पर चलने का, ईश्वर के रास्ते पर चलने का दृढ़ संकल्प करके तदनुसार आचरण करें तो यही बढ़िया गुरुपूजन होगा। हम भी अपने हृदय में गुरुतत्व को प्रकटाने के लिए तत्पर हो जाएं। यही बढ़िया गुरुपूजा होगी। जिनके जीवन में सद्गुरु का प्रकाश हुआ है वास्तव में उन्हींका जीवन जीवन है, बाकी सब तो मर ही रहे हैं। मरनेवाले शरीर को जीवन मानकर मौत की तरफ घसीटे जा रहे हैं। धनभागी तो वे हैं जिनको जीते-जी जीवन्मुक्त सद्गुरु मिल गए। जिनको जीवन्मुक्त सद्गुरु का सान्निध्य मिल गया, आत्मारामी संतों का संग मिल गया, वे बड़भागी हैं। अष्टावक्र महाराज को पाकर जनकजी अपने को बड़भागी मानते हैं, वशिष्ठजी को पाकर श्रीरामचंद्रजी अपने को बड़भागी मानते हैं, गुरु सांदीपनिजी को पाकर श्रीकृष्ण-बलराम अपने को बड़भागी मानते हैं और गुरु गोविंदपादाचार्य को पाकर शंकराचार्यजी अपने को बड़भागी मानते हैं, शंकराचार्यजी को पाकर तोटक अपने को बड़भागी मानते हैं, श्री जनार्दन स्वामी को पाकर एकनाथजी और एकनाथजी को पाकर पूरणपोड़ा अपनेको बड़भागी मानते हैं तो श्री समर्थ को पाकर शिवाजी अपनेको बड़भागी मानते हैं। सुकरात का शिष्य कहे जाने में प्लेटो को आनंद आता है और प्लेटो का शिष्य कहलाने में अरस्तु गर्व का अनुभव करते हैं।